WE
Vol 6 No. 2
December 2025

e-ISSN: 2583-2298

Book Review-2

SINGH, K. P. (2025). *The Planner: Actions And Reflections*. Today & Tomorrow's Printers and Publishers. New Delhi. P.493. ISBN-978-93-485960-9-3. Price: 6,995/-

Mohan Parnami*

1. प्रस्तावना

सुप्रसिद्ध गाँधीवादी विद्वान प्रो० के० पी० सिंह की सद्य: प्रकाशित पुस्तक '***The Planner: Actions And Reflections***' एक अनूठा प्रयोग है, जो कि सूचना-संग्रहण एवं प्रकाशन के क्षेत्र में नवाचार प्रस्तुत करता है। इस ग्रंथाकाय पुस्तक का विमोचन मार्च- 2025 में हुआ था। समीक्ष्य ग्रन्थ के केंद्र में मुख्य रूप से भारत के सुप्रसिद्ध उच्च शिक्षण संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालय में गाँधी भवन के निदेशक के रूप में प्रो० सिंह द्वारा संयोजित किए गए अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के चार बड़े अकादमिक सम्मेलनों के दौरान निर्गत प्रभूत सामग्री को रखा गया है। ये कार्यक्रम वर्ष 2022-23 में विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष (1922-2022) के गौरवशाली उपलक्ष्य पर आयोजित किए गए थे, जिनमें योग, नया भारत, गाँधी, अहिंसा और हर घर ध्यान जैसे सामयिक एवं अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषयों को चर्चा के केंद्र में रखा गया था। इन कार्यक्रमों में विभिन्न क्षेत्रों की मानद एवं सुविख्यात विभूतियों ने संग्रहणीय वक्तव्य प्रदान किए थे। ये चारों ही कार्यक्रम दिल्ली विश्वविद्यालय के 'शताब्दी वर्ष महोत्सव' की अमर एवं अक्षुण्ण कीर्ति में चार चाँद लगाने वाले सिद्ध हुए थे। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय न्यूज चैनल्स, प्रिंट मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक इन आयोजनों की अनुगूंज हमें देखने को मिलती है। सुधि लेखक द्वारा समीक्ष्य पुस्तक में इसी अनुगूंज को पृष्ठांकित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। समीक्ष्य पुस्तक को लेखक ने दिल्ली विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो० योगेश सिंह को समर्पित की है। लेखक का कहना है कि इन सभी उपक्रमों के लिए उन्हें जहाँ से निरंतर ऊर्जा, ऊष्मा और प्रेरणा मिलती है, उन्हीं को यह ग्रन्थ समर्पित किया गया है।

2. लेखक परिचय

समीक्ष्य पुस्तक के लेखक प्रो० के० पी० सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्कालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में वरिष्ठ प्रोफ़ेसर के पद कार्यरत हैं, इसके साथ ही विश्वविद्यालय के कई उच्च प्रशासनिक पदों पर भी अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने 14 पुस्तकों का लेखन, करीब 18 पुस्तकों का संपादन, 191 शोध पत्रों का प्रकाशन, 17 पीएच० डी० एवं 38 एम्० फिल० शोध कार्यों का सफल निर्देशन किया है। वे एक सुप्रसिद्ध गाँधीवादी विद्वान् एवं अत्यंत व्यस्त शिक्षाविद् हैं, जो कि निरंतर भारत-भाव एवं भारत-बोध के प्रचार-प्रसार में रत रहते हैं। ज्ञान-विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उन्होंने यायावरी वृत्ति को अंगीकार किया है। शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए देश-विदेश के कई महत्त्वपूर्ण संस्थानों से बेस्ट टीचर अवार्ड (2019), विश्व बागेश्वरी सम्मान (2023), शिक्षा के संत (2023), वर्ल्ड लाइब्रेरी लीडर अवार्ड (2024) जैसे कई महनीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। यह मधुर संयोग है कि अप्रैल 2022 में जब प्रो० सिंह को गांधी भवन के निदेशक पद का दायित्व सौंपा गया, तब दिल्ली विश्वविद्यालय अपना 'शताब्दी वर्ष' मना रहा था। ऐसे में उन्होंने विश्वविद्यालय के समक्ष चार बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के अकादमिक आयोजनों की रूपरेखा प्रस्तावित की, जिसे माननीय कुलपति प्रो० योगेश सिंह की सोत्साह स्वीकृति प्राप्त हुई। इन आयोजनों ने निस्संदेह विश्वविद्यालय के गौरव में अभूतपूर्व वृद्धि की। इन आयोजनों में हुए वैचारिक आलोड़न-विलोड़न से निर्गत सामग्री को ही समीक्ष्य पुस्तक में संग्रहीत करने का सदाशयी प्रयास किया गया है।

*Research Scholar, Department of Hindi, Maharaja Chhatrasal Bundelkhand University, Chhatarpur (M.P.); Email: mohanpranami@gmail.com

3. पुस्तक की संरचना

समीक्ष्य पुस्तक की संरचना और सामग्री-संयोजन की योजना अनूठी एवं अद्वितीय है। ऐसा पैटर्न ग्रंथों के प्रकाशन में पहली बार देखने को मिला है। पहली बार इस पैटर्न का प्रयोग प्रो० के० पी० सिंह ने 2020 में प्रकाशित अपनी पुस्तक '***Playing from the Fornt***' में किया था। समीक्ष्य पुस्तक को पाँच बड़े-बड़े अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक अध्याय प्रायः तीन खण्डों में विभक्त है। पहले खंड में लेखक ने विस्तार से अध्याय का परिचय दिया है। दूसरे खंड में आयोजन में आमंत्रित विद्वान वक्ताओं द्वारा दिए गए वक्तव्यों को हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में जस का तस संकलित किया गया है। यह अत्यंत श्रम एवं समय साध्य कार्य है। दृश्य-श्रव्य माध्यमों से पाठ्य सामग्री में अंतरित कर देने से वे सभी वक्तव्य पठन-पाठन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी संदर्भ के रूप में सुलभ हो गए हैं। कोई भी अनुसंधाता या जिज्ञासु छात्र प्रामाणिक स्रोत अथवा संदर्भ के रूप में इस सामग्री का उपयोग कर सकता है। वस्तुतः ज्ञान का सबसे बड़ा और विश्वसनीय स्रोत विशेषज्ञों के व्याख्यान और साक्षात्कार को ही माना जाता है। भारत की आर्ष ज्ञान परंपरा में 'श्रवण' का बहुत महत्व है। वैदिक काल (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व) में हमें श्रुति परंपरा के उल्लेख प्राप्त होते हैं। उपनिषद इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। उपनिषद का अर्थ ही है– ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु के पास जाकर बैठना। उपनिषद् में ऋषि और शिष्य के बीच बहुत सुन्दर और गूढ संवाद है, जो पाठक को वेद के मर्म तक पहुँचाता है। श्रीमद्भागवत के सातवें स्कंध में भक्त प्रवर प्रह्लाद की रोचक कथा मिलती है। पिता हिरण्यकशिपु गुरुकुल से लौटे अपने पुत्र को अंक में बैठाकर अत्यंत वत्सलतापूर्वक पूछते हैं कि हे पुत्र ! आपने गुरुजी से कौन-कौनसी शिक्षा प्राप्त की है, उनमें से कुछ उत्तम बातें मुझे सुनाओ—

प्रहादानूच्यतां तात स्वधीतं किञ्चिदुत्तमम् ।
कालेनैतावतायुष्मन् यदशिक्षद्गुरोर्भवान् ॥

इस प्रश्न के उत्तर में पाँच वर्ष के भक्तराज प्रह्लाद ने अपने पिता को नवधा भक्ति का उपदेश किया, जिसमें प्रथम भक्ति 'श्रवण' को माना गया है—

श्रवणं कीर्तनं विष्णुः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥[1]

इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी 'श्रीरामचरितमानस' के अरण्यकाण्ड में भगवान राम के मुख से भक्तिमति शबरी के प्रति नवधा भक्ति का उपदेश कहलवाया है। यहाँ भी 'श्रवण' को ही प्रथम भक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है—

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।
दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥[2]

आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों ने भी सीखने की प्रक्रिया में 'श्रवण कौशल' को सबसे प्रमुख और प्राथमिक शैक्षणिक उपादान माना है। देशभर में बी० एड० के पाठ्यक्रमों में '***Good Listening***' (अच्छा कैसे सुनें ?) नाम से एक अध्याय का पठन-पाठन किया जाता है। लिहाजा भारत की पुरातन एवं अधुनातन शिक्षा-व्यवस्था से भली-भाँति परिचित सुधि लेखक ने अत्यंत श्रम एवं धैर्यपूर्वक सभी व्याख्यानों के लिखित रूप संकलित किए हैं। इससे एक ही स्थान पर सभी व्याख्यान पाठकों को सुलभ हो गए हैं। तीसरे खंड में समाचार-पत्रों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के साथ सोशल मीडिया में इन आयोजनों को मिली परिव्याप्ति और लघु एवं विस्तृत प्रतिक्रियाओं को संकलित किया गया है।

4. अध्याय योजना

समीक्ष्य पुस्तक का प्रथम अध्याय वर्ष 2022 में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय में आयोजित 'मानवता के लिए योग' नामक भव्य आयोजन पर आधारित है। यह कार्यक्रम दिल्ली विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो० योगेश सिंह की अध्यक्षता एवं गांधी भवन के निदेशक प्रो० के० पी० सिंह के संयोजकत्व में 22 जून, 2022 को यूनिवर्सिटी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में स्थित मल्टीपर्पज हॉल में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध योग गुरु, पतंजलि योगपीठ एवं पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार के संस्थापक

[1] देखें, श्रीमद्भागवत महापुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित संस्करण, स्कंध- 07, अध्याय- 05, श्लोक- 22, 23.
[2] देखें, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित संस्करण, अरण्यकाण्ड, दोहा- 34, चौपाई- 04

स्वामी रामदेव पधारे। उनका सम्बोधन इस अध्याय के द्वितीय खंड में संकलित किया गया है। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा—

"मैं तो गुरुकुल का पढ़ा हुआ हूँ। मैंने तो कभी यूनिवर्सिटी का गेट तक नहीं देखा। मैं गुरु-शिष्य परंपरा में पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ने वाला विद्यार्थी रहा हूँ। लेकिन अभी मैं पतंजलि विश्वविद्यालय का चांसलर हूँ। इतना अच्छा जीवन जियो कि तुम्हे देखकर सब योगी हो जाएँ। प्रो० योगेश सिंह जी को देख रहा हूँ। मुझे तो वे विद्यार्थी लग रहे थे बाद में पता चला कि वे दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर हैं। "

(पृ० 28)

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे भारत सरकार के संसदीय कार्य एवं संस्कृति मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने योग की आवश्यकता पर बल दिया था। इस प्रकार प्रथम अध्याय लगभग 50 पृष्ठों पर फैला हुआ है। द्वितीय अध्याय 'नया भारत' विषय पर 10 नवम्बर, 2022 को दिल्ली विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन के सभी छोटे-बड़े घटकों और उपादानों को अपने वृत्त में समेटता है। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो० योगेश सिंह की अध्यक्षता एवं समीक्ष्य ग्रन्थ के लेखक प्रो० के० पी० सिंह के संयोजकत्व में आयोजित हुआ था। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में भारत के तत्कालीन उप-राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ पधारे थे। यह प्रो० सिंह द्वारा की गयी एक सार्थक पहल थी, जिसमें आगत अतिथियों ने भारत के उज्जवल भविष्य के प्रारूप और प्रस्ताव को प्रस्तुत किया। यह अध्याय लगभग 60 पृष्ठों में समाया हुआ है।

तृतीय अध्याय 'गाँधी और आज का भारत' जैसे ज्वलंत विषय पर केंद्रित है। विश्वविद्यालय के वाइस रीगल लॉज में माननीय कुलपति के सभापतित्व और प्रो० के० पी० सिंह के संयोजकत्व यह विशिष्ट व्याख्यान समारोह 27 अक्टूबर, 2022 को आयोजित किया गया। इस आयोजन में उत्तराखंड के महामहिम राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) श्री गुरमीत सिंह एवं पद्मभूषण डॉ० बिंदेश्वर पाठक जैसे विशेषज्ञों ने वक्तव्य प्रदान किये। कार्यक्रम के संयोजक के रूप में प्रो० सिंह ने सभी सम्मान्य अतिथियों का स्वागत किया एवं केंद्रीय विषय की प्रस्तावना करते हुए आज के भारत की चुनौतियों और प्रश्नों के बीच गांधीजी और उनकी विचारणा की उपादेयता के कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित किया। इन सभी व्याख्यानों को लगभग 20 पृष्ठों में संकलित किया गया है। इसके पश्चात् विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर मिली प्रतिक्रियाओं और विचारों को संग्रहीत किया गया है। इस प्रकार यह अध्याय लगभग 50 पृष्ठों की परिधि में समाया हुआ है।

चतुर्थ अध्याय 'हर घर ध्यान : ध्यान एवं मानसिक स्वास्थ्य' विषय पर केंद्रित है। यह विशेष व्याख्यान सत्र दिनांक 03 मार्च, 2023 को दिल्ली विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो० योगेश सिंह की अध्यक्षता एवं समीक्ष्य ग्रन्थ के सुधि लेखक प्रो० सिंह के संयोजकत्व में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध धर्मगुरु और आर्ट ऑफ़ लिविंग जैसी वैश्विक संस्था के संस्थापक पद्म विभूषण श्री श्री रविशंकर एवं हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर पधारे। अध्याय परिचय में प्रो० सिंह इस संबंध में अत्यंत महत्त्वपूर्ण टिप्पणी करते हैं —

"भारत में खासकर कोविड के समय और उसके बाद तनाव, चिंता, प्रदर्शन के दबाव और अवसाद के कारण आत्महत्या और खुद को नुकसान पहुँचाने की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि हुई है। हालिया अनुसंधानों से हमें पता चलता है कि ध्यान चिंता, अवसाद और तनाव को काफी काम कर सकता है। प्रसन्नता और उल्लास को बढ़ाने वाले हार्मोन्स के उत्पादन में वृद्धि कर सकता है।"

(पृ० 161)

हम एक ऐसे विडम्बनापूर्ण युग में जी रहे हैं, जिसमें पश्चिम की तर्ज पर मनुष्य को मशीन बना देने की वकालत की जा रही है। तथाकथित बुद्धिजीवियों द्वारा भारत के सभी लोगों को '***Scientific Temperament***' अपनाने की सलाह दी जा रही है। हम जितने ज्यादा वैज्ञानिक स्वभाव वाले होते जाएंगे, क्रमश: उतने ही प्रकृति और स्वयं से दूर होते चले जाएंगे। इसके परिणाम अवसाद, चिंता और आत्महत्या के रूप में सामने आएंगे। भारत में विज्ञान शब्द नया नहीं है। ऐसा तो कतई नहीं है कि पश्चिम के संपर्क में आने के बाद ही भारत को 'विज्ञान' शब्द मालूम हुआ है। गीता के सातवें अध्याय का नाम 'ज्ञान विज्ञान योग' है—

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवत्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोध्याय:।

वस्तुतः दो विपरीत व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, पदार्थ और परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखने का नाम जीवन है। किसी एक और झुक जाने को जीवन नहीं कहा जा सकता। बुद्धि और हृदय के बीच संतुलन स्थापित करते हुए चलना ही श्रेयस्कर है। विश्व का कोई भी बुद्धिजीवी यह नहीं कह सकता कि उसका काम केवल बुद्धि से चल जाएगा। उसे हृदय की कोई आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार हमें विज्ञान और आस्था, तर्क और भावना के बीच भी संतुलन स्थापित करते हुए आगे बढ़ना होगा। भारतीय मनीषा ने इसी संतुलन के संधान की क्षमता को विवेक, प्रज्ञा एवं ऋतम्भरा जैसे नामों से सम्बोधित किया। पश्चिम के संपर्क में आने से बहुत पहले हमारे ऋषि उन्नत भौतिक, जैविक एवं रसायन विज्ञान विकसित कर चुके थे। हम बहुत से रोगों की बिना किसी साइड इफेक्ट के चिकित्सा कर सकते थे। हमारे चिकित्सा शास्त्री शल्य-चिकित्सा पद्धतियों में अत्यंत कुशल थे। हमारी काल गणना और पंचांग सर्वाधिक वैज्ञानिक, सूक्ष्म और प्रामाणिक हैं। आधुनिक पश्चिमी विज्ञान द्वारा विकसित की गयी काल गणना की अत्यंत उन्नत पद्धतिया एवं दूरबीनें भी अब कहीं जाकर ऐसी सूक्ष्म गणनाएँ कर पाने में सक्षम हुई हैं। यह सही है की आधुनिक पश्चिमी विज्ञान ने शानदार उन्नति की है। उसने जीवन की कई गंभीर बीमारियों और समस्याओं का निदान खोज लिया है। मानव जीवन पहले की तुलना में अत्यंत सरल एवं सुविधाजनक हुआ है। लेकिन इसके साथ ही अवसाद, तनाव, अकेलापन, असंवाद, अविश्वास और आत्महत्या जैसी स्थितियों को भी लेकर आया है। यह बहुत भयावह स्थिति है कि पिछले 20-25 वर्षों में पढ़ने वाले युवा एवं किशोरों के बीच आत्मघात की प्रवृत्ति आश्चर्यजनक रूप से बढ़ी है। निस्संदेह इसका उपचार योग और ध्यान से अपने भीतर मानवीय गुणों का विकास करने एवं उन्हें बनाए रखकर आधुनिक विज्ञान का उपयोग करने में निहित है। बाजार द्वारा प्रचारित तथाकथित '***Scientific Temperament***' से मानवता का कोई भला होता नहीं दिखता। इस आयोजन में '***Scientific Temperament***' के बनिस्बत '***Human Temperament***' को विकसित करने पर बल दिया गया। यह अध्याय करीब 60 पृष्ठों में फैला हुआ है। समीक्ष्य पुस्तक के पंचम अध्याय का शीर्षक '***Academic Affairs Steered at Gandhi Bhawan***' रखा गया है। इस अध्याय में 2022 से लेकर 2024 तक तीन वर्षों के दौरान गांधी भवन में अथवा गांधी भवन के नेतृत्व में आयोजित छोटे-बड़े 25 कार्यक्रमों को विस्तार से प्रकाशित किया गया है।

5. मौलिक प्रदेय

समीक्ष्य पुस्तक मुख्यतः दो तरह के नवाचार प्रस्तुत करती है— विस्तृत चित्र-सूची का निर्माण और सोशल मीडिया के विभिन्न प्रकल्पों में प्रकाशित सूचनाओं, समाचारों, चित्र-समूहों और प्राप्त प्रतिक्रियाओं का ऐतिहासिक सन्दर्भ के रूप में प्रलेखीकरण। निस्संदेह सूचना-संग्रहण और प्रकाशन जगत में यह प्रो० के० पी० सिंह का मौलिक प्रदेय हैं। संभवतः इससे पूर्व इस प्रकार का प्रयोग नहीं देखा गया। चित्र-सूची अध्ययनकर्ता को न केवल तत्काल वांछित सामग्री पर पहुँचा देती है, वरन् उसके संदर्भीकरण को भी सरल बनाती है। इसे समीक्ष्य पुस्तक की मुख्य विशेषताओं में परिगणित किया जा सकता है।

दूसरा, सोशल मीडिया को ज्ञान के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में प्रतिष्ठापित एवं स्वीकृत करना प्रकाशन के क्षेत्र में प्रो० के० पी० सिंह की महत्त्वपूर्ण पहल है। इस समीक्षा-लेख में दूसरे बिंदु के अंतर्गत लेखक का परिचय देते हुए हम स्पष्ट कर आए हैं कि वे पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के निष्णात एवं अनुभवी आचार्य हैं। वे इस कदम में संभावित संकट और संभावनाओं से अच्छी तरह परिचित होंगे। उन्होंने सभी पाँचों अध्यायों में सोशल मंचों पर साझा किए गए चित्र-समूहों और उन पर मिली प्रतिक्रियाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया है। समय के प्रवाह में आज हम ए० आई० युग की चौखट पर खड़े हुए हैं। आज भी भारतीय बुद्धिजीवी सोशल मीडिया को ज्ञान के स्रोत के रूप में स्वीकार नहीं कर पा रहे है। जबकि आज विश्व भर के बुद्धिजीवी अपने विचारों के त्वरित प्रकाशन एवं पाठक-समूहों तक आसान पहुँच बनाने के लिए सोशल मंचों का खूब इस्तेमाल करते हैं। प्रो० सिंह से एक साक्षात्कार के दौरान मैंने पूछा कि आपने फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और वाट्स एप समूहों पर मिली प्रतिक्रियाओं को इस पुस्तक में प्रकाशित किया है, लेकिन कई बुद्धिजीवी सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री को प्रामाणिक नहीं मानते हैं। इस पर उनका कहना है—

"सोशल मीडिया पर ज्ञान का अकूत भण्डार आकार पा रहा है। वह केवल लम्बे लेखों और कविताओं के रूप में ही नहीं, सामान्य अथवा विशेष प्रतिक्रियाओं में भी छुपा हुआ है। जैसे गंगा गोमुख से निकलती है और गंगा सागर तक लम्बी यात्रा में कितना कुछ उपयोगी-अनुपयोगी इसमें मिलता चला जाता है। ऐसे ही सोशल मीडिया में भी बहुत कुछ बहा जा रहा है।

इससे पहले कि यह काल के गाल में समाहित हो जाए, इसमें जो भी शुभ और वांछनीय तत्त्व हैं, उन्हें बचा लेने के लिए हमें उद्योग करना होगा। हमें यह पहल करनी ही होगी। निश्चित रूप से हमें कुछ जोखिम उठाने के लिए खुद को तैयार करना होगा।"

6. शीर्षक की सार्थकता

जैसा कि उपरोक्त पाँचों अध्यायों पर चर्चा करते हुए हमने जाना कि यह पुस्तक लेखक के संयोजकत्व में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के अकादमिक सम्मेलनों एवं उनकी प्रतिध्वनि पर केंद्रित है। समीक्ष्य पुस्तक का नामकरण '**The Planner : Actions And Reflections**' किया गया है। हम जानते हैं कि किसी भी आयोजन अथवा उपक्रम के सफल होने के पीछे अच्छी योजनाएँ होती हैं। योजना जितनी सूक्ष्म होगी, परिणाम उतने ही बेहतर मिलेंगे। मैंने वर्ष 2023 में प्रो० के० पी० सिंह के मार्गदर्शन में 'अपने अपने समय और समाज की चुनौतियों के आलोक में महामति प्राणनाथ और महात्मा गांधी' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। इस दौरान मैंने पाया कि वे छोटी से छोटी चीजों को भी बड़ी सूक्ष्मता से विचार करके योजना बनाते हैं और अधिकारियों से निरंतर संपर्क में रहकर अत्यंत कुशलतापूर्वक उनके क्रियान्वन पर बारीकी से नजर बनाए रखते हैं। यह पुस्तक अपने मूल में उन्हीं सूक्ष्म योजनाओं के प्रणयन, क्रियान्वन और प्रतिबिम्बन का ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह ग्रन्थ लेखक को '**The Great Planner**' के रूप में स्थापित करता है, जो केवल योजनाएँ बनाने में ही नहीं, वरन् उसे अपने स्वेद और रक्त से सींचकर फलश्रुति तक पहुँचाने में भी सिद्ध हैं। कहना न होगा कि चयनित शीर्षक ग्रन्थ की अंतर्वस्तु का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी सार्थकता को स्वयं सिद्ध करता है। स्वयं लेखक के शब्दों में—

"Planning, Execution, Management are the basic steps for a planner to achieve stated goals and objectives. Among the three concepts, planning is the most catalytic factor which determines success. Planning is the process of setting goals and deciding how to achieve them, while management is the process of putting those plans into action. A person who makes decisions about how something will be done in the future, technically refers to a Planner."

(Preface, PP. 06)

----------000----------

©WE-Faculty